Demand to remove ban on export of Kala Namak Rice

श्री जगदम्बिका पाल (डुमरियागंज) : अधिष्ठाता महोदय, मैं आपका बहुत आभारी हूं और आप स्वयं अवगत हैं कि सिद्धार्थनगर और नेपाल की उस तराई में जहां भगवान गौतम बुद्ध पैदा हुए, जब बुद्ध जी थे, तो बुद्ध के प्रसाद के रूप में वहां काला नमक चावल दिया करते थे। आज वह काला नमक चावल देश और दुनिया के बाजारों में जिस तरह से बुद्ध के प्रसाद के रूप में गया है, उससे उसकी मांग बढ़ी। उसको देखते हुए उत्तर प्रदेश की सरकार और मुख्य मंत्री योगी आदित्यनाथ जी ने उसको ?वन डिस्ट्रिक्ट, वन प्रोडक्ट? में भी शामिल कर दिया है। आप स्वयं काला नमक चावल के बारे में जानते हैं। जल संसाधन मंत्री श्री गजेन्द्र सिंह जी मेरी कॉन्स्टीट्यूवेंसी में गए थे। इन्होंने वहां काला नमक चावल के बारे में किसानों से सुना और वह 2700 हेक्टेयर बढ़कर 15000 हेक्टेयर हो गया, जिओ टैग हो गया और वन डिस्ट्रिक्ट, वन प्रोडक्ट हो रहा है। वह निर्यात हो रहा था, लेकिन अभी बासमती को छोड़कर काला नमक चावल पर प्रतिबंध लगा दिया गया है। वहां के किसान ऋण ले रहे थे। वहां के किसानों के पास सिंगापुर का ऑर्डर होगा, यूरोपियन ऑर्डर होगा।

मैं आपके माध्यम से सरकार से चाहता हूं कि काला नमक चावल के निर्यात पर जो प्रतिबंध लगाया गया है, उस प्रतिबंध को समाप्त किया जाए, जिससे सिद्धार्थनगर के किसानों को एक नया जीवन मिल सके और वे उत्तर प्रदेश की वन ट्रिलियर डॉलर इकोनॉमी में अपना योगदान दे सकें।